Indian Streams Reserach Journal
Vol.2,Issue.II/March; 12pp.1-4
डॉ. ज्योतिशर्मा
ISSN:-2230-7850

Research Papers

संस्कृत–साहित्य में पर्यावरण संरक्षण

डॉ. ज्योतिशर्मा
कुरुक्षेत्र

प्रस्तावना :–

जीवों की अनुक्रियाओं को प्रभावित करने वाली समस्त भौतिक परिस्थितियों के योग को 'पर्यावरण' कहते हैं । पर्यावरण के बिना किसी जीव की कल्पना करना भी असम्भव है। प्राचीनकाल से ही मन्त्रद्रष्टा ऋषिगण और परवर्ती कवि पर्यावरण से सम्बद्धथे । उन्हें इस बात का ज्ञान था कि पर्यावरण के बिना जीवन सम्भव नहीं है। इसलिए उन्होंनें वैदिक–मन्त्रों में और महाकाव्यों में जीवन में पर्यावरण का महत्त्व और इसके उपाय बताए हैं । इनमें उपलब्ध निर्देशों के अनुसरण से ही पर्यावरण संरक्षण सम्भव है । 'परि'+'आङ्.'– इन दो उपसर्गों से 'वृञ'–'आवरणे' धातु से 'ल्युट्'– प्रत्यय करने पर 'पर्यावरण' शब्द निष्पन्न होता है । इस शब्द का व्युपत्तिपरक अर्थ है– 'यत् आवृणोति सर्वान् तत् पर्यावरणम्' अर्थात् चारों ओर का पर्यावरण, भूमि आदि पंचमहाभूत, वनस्पतियाँ सभी चराचर जीव, भूमि में स्थित अन्य पदार्थ पर्यावरण की रचना करते हैं ।

मैकमिलन शब्दकोष के अनुसार–The National ¡orld including the land, water, air and plants, animals, especially considered as something that is effected by human activity. इस प्रकार पर्यावरण का निर्माण मानव और उसको घेरे हुए भौतिक एवं अभौतिक तत्त्वों के संयोजन से होता है । आकाश, वायु, जल, भूमि तथा अग्नि पर्यावरण के प्रमुख घटक हैं । मानव का जीवन इन्हीं तत्त्वों पर आधारित है ।

पर्यावरण में सभी तत्त्वों का एक निश्चित अनुपात होता है, जिससे पर्यावरण ठीक प्रकार से कार्य करता है, यह निश्चित अनुपात पर्यावरण–सन्तुलन है । यदि पर्यावरण का कोई एक घटक भी सीमा के बाहर निरन्तर उपयोग में आता है तो इससे पर्यावरण में असन्तुलन होने लगता है इसी प्राकृतिक–असन्तुलन को 'प्रदूषण' कहा गया है ।प्राकृतिक संसाधनों के लोलुपतापूर्ण प्रयोग से पर्यावरण प्रदूषित हो रहा है । आधुनिक युग की विकरालतम समस्याओं में से एक समस्या – 'पर्यावरण–प्रदूषण' है । कभी यह विज्ञान का एक प्रमुख सन्दर्भ था जिसका अध्ययन एक विशेष प्रकार के चिन्तन तथा प्रयोग के लिए हुआ करता था, परन्तु आज परिस्थिति बदल गई है । आज यह धर्म तथा अध्यात्म का एक गूढ़ विषय बन गया है । संस्कृत–वाङ्मय में पर्यावरण–संरक्षण की धारणा सम्पूर्ण रूप से दृष्टिगोचर होती है । सम्पूर्ण संस्कृत वाङ्मय में वैदिक–धर्म के आधार पर वर्णित लोकव्यवहार और जीवनयापन पद्धति में, कहीं पर भी पर्यावरण की प्रतिकूलता नहीं थी । वेद–वेदौं.शास्त्र पुराण–काव्यों में प्रतिपादित सामाजिक–राजनैतिक विचारों की, लौकिक एवं आध्यात्मिक सिद्धान्तों की, मानवीय लोक–व्यवहारों तथा बाह्य–आभ्यन्तर धार्मिक आचारों की समीक्षा करके पर्यावरण–संरक्षण के प्रयास सफल हो सकते हैं ।

आधुनिक युग में सर्वत्र भय का वातावरण विद्यमान है । प्रकृति के साथ मानव का सम्बन्ध सामजस्यपूर्ण नहीं है । अथर्ववेद के अभयसूक्त में तो कहीं पर भी भय न हो – इस भावना से ऋषि स्तुति करता है । हमारे पर्यावरण में यदि कहीं पर भी अशान्ति विद्यमान है तो यह विनाश के लिए ही है । इसलिए द्युलोक में, अन्तरिक्ष में, पृथ्वी में, औषधियों में, वनस्पतियों में सर्वत्र शान्ति की स्थापना हेतु ऋषिगण स्तुति करते हैं । शान्ति भी दो प्रकार की होती है– एक तो मन की तथा दूसरी प्रकृति के पाँच तत्त्वों की शान्ति । इन पाँच तत्त्वों की शान्ति यज्ञ द्वारा होती है । मार्कण्डेय पुराण में कहा गया है कि यज्ञ के बिना हमारी पृथ्वी,जल, वायु, सूर्य और अग्नि की शान्ति का अन्य उपाय नहीं है ।

पुराणों में सभी प्रकार की शान्तियों का वर्णन किया गया है – आकाशीय, पृथ्वी सम्बन्धी महा–उत्पात आ जाने पर, अति वृष्टि एवं अनावृष्टि के कु–अवसर पर शान्ति स्थापित करने की धारणा वर्णित है । पशु–पक्षि संरक्षण बनाए रखने के लिए पुराणों में विभिन्न प्रकार के नरकों के कष्टों को भोगने का वर्णन उपलब्ध है । जो लोग पशुओं को अपने स्वार्थ के लिए बुरी तरह से मारते हैं एवं शिकार

Please cite this Article as : *डॉ. ज्योतिशर्मा*, *संस्कृत–साहित्य में पर्यावरण संरक्षण*: Indian Streams Research Journal (March ; 2012)

करते है, वे सब नरकगामी होते हैं और यमदूतों द्वारा अनेक यातनाओं को सहते हैं । नारद पुराण में कहा गया है कि जो व्यक्ति गाय का वध करता है, वे पाँच कल्प तक नरक की घोर यातनाओं को झेलता है । इस प्रकार यदि आज व्यक्ति पुराणों ग्रन्थों की इन बातों को समझेगा, उन पर अमल करेगा, तो आज न दुर्घटनाएँ होगी, न ही उसके जीवन में कोई समस्याएँ आएंगी । दूसरे जीवों पर दया कर, उसकी रक्षा करने पर ही स्वयं की रक्षा होगी । वेद का सन्देश है कि यदि मानव वायु, जल, भूमि तथा प्रकृति के घटकों को शुद्ध रखेगा तो पर्यावरण स्वयं ही हितकारी तथा शुद्ध रहेगा ।

वेदानुसार वायु प्राणशक्ति है । वायु में विद्यमान अमृत तत्त्वकी ओर सचेत करते हुए कहा गया है कि – हे वायु ! तेरे घर में अमृत की निधि रखी हुई है, उसमें से कुछ अंश हमें भी प्रदान कर, जिससे हम दीर्घजीवी बनें । वायु के अन्दर विद्यमान 'आक्सीजन' ही अमृत की निधि है । यह ही मनुष्य को प्राण देती है तथा शारीरिक गन्दगी को दूर करती है । जिससे मनुष्य दीर्घजीवी होता है, अतः वेदों का कहना है कि सर्वथा वायु स्वच्छ रहे । कार्बन डाइऑक्साइड की मात्रा आवश्यकता से अधिक बढ़ने पर वायु प्रदूषित होती है । पेड़ कार्बन

1.यया द्यौश्च पृथिवी च न बिभीतो न रिष्यतः एवा में प्राणा बिभेः । –अथर्ववेद, 15.1–3

2.¬ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष शान्तिः । पृथिवीशान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः । वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्मशान्तिः । सर्वंशान्तिः । शान्तिरेव शान्ति । सा मा शान्तिरेधि । यजुर्वेद, 36.17

3.(क)गरुडपुराण (ख)श्रीमद्भागवत् पुराण 11/24

4.नारद पुराण–1/76

5.यददो वात ते गृहे मृतस्य निधिर्हितः । ततो नो देहि जीवसे ।।–ऋग्वेद–1.186.3

डाइऑक्साइड को ग्रहण कर मनुष्यों के लिए आक्सीजन छोड़ते हैं । इसीलिए वायु–प्रदूषण रोकने के लिए 'वनं आस्थाप्यध्वम्' अर्थात् वन में वनस्पतियाँ उगाओ, 'वृक्षारोपण करो' तथा वनमहोत्सव मनाओ' । यदि मनुष्य अपने स्वार्थवश पेड़ों को काटना चाहता है तो कार्बन डाइऑक्साइड की अत्यधिक मात्रा को रोकने के लिए यजुर्वेद में कहा गया है कि पेड़–पौधों को ऐसे काटे कि उसमें सैंकड़ों स्थानों पर पुनः अंकुर फुट जाएं जो वायु प्रदूषण के निवारण में सहायक है । अथर्ववेद में घरों के बाहर आने जाने के रास्ते पर दोनों तरफ फूलों वाली दूब, घास लगाने और मैदान में फव्वारों एवं कमलों से सजा हुआ सरोवर बनाने को कहा है ।

वृक्ष–वनस्पति–संरक्षण की धारणा बनाए रखने के लिए पुराणों में कहा गया है कि जो व्यक्ति वन अथवा मार्ग के किनारे वृक्षों को लगाता है वह व्यतीत हुए तथा आगे आने वाले समस्त पितृ–वंशों का उद्धार कर देता है । इसलिए वृक्षारोपण करना चाहिए। अग्निपुराण में कहा गया है कि दस कुँओं के समान एक तालाब है, दस तालाबों के समान एक पुत्र है और दस पुत्रों के समान एक वृक्ष है अर्थात् वृक्ष को पुत्र से भी महान् बताया गया है । वर्तमान युग में इस बात की आवश्यकता है कि पौराणिक विचारधारा के अनुसार आकाश, वायु, अग्नि, जल, पृथ्वी, नक्षत्र, प्राणीमात्र दिशाएँ, पेड़, नदी, समुद्र और अन्य जो कुछ भी इस पृथ्वी पर हैं, उसे ईश्वर का ही रूप मानकर उसके प्रति नमन और आदर का व्यवहार करना चाहिए ।

आजकल कृत्रिम रसायनों के प्रयोग से अनाज भी दूषित हो रहा है, परन्तु वेद इस के लिए सतर्क था । उसका कहना था– 'अन्नपतेऽन्नस्य नो देहि अनमीवस्य शुष्मिणः' । जल–शुद्धि के बारे में भी वेदों में वर्णन मिलता है । स्नान करने तथा पीने के लिए शुद्ध जल होना चाहिए

हिमालय के जल, स्रोतों के जल, सदा बहते रहने वाले जल, मरुस्थलों के जल, आद्र प्रदेशों केजल, भूमि खोदकर निकाले जाने वाले जल तथा विभिन्न प्रकार के मिट्टी, लोहा, तांबा, सोना, चाँदी आदि से बने घड़ो में रखे हुए जल अपने–अपने स्थान विशेष के लाभकारी खनिजों औषधियों तथा गन्धक, लोहा, अभ्रक आदि से संयुक्त होने के कारण सबके लिए प्रदूषण को नष्ट करने वाले तथा रोगनाशक हों । मनुष्य को भी कहा गया है ।

6.ऋग्वेद–10.101.11

7.अय हि त्वा स्वधितिस्तेतिजानः प्रणिनाय महते सौभाग्याय । अवस्त्वं देव वनस्पते शान्तवल्शो विरोह, सहस्रवल्शा वि वयं रुहेमा–यजुर्वेद–5/43

8.आयने ते परायणे दूर्वा रोहतु पुष्पिणीः । उत्सो वा तत्र जायतां ह्रदो वा पुण्डरीकवान् ।।– अथर्ववेद,196

.9.पदम्पुराण, हलायुध कोष, 632

10.अग्निपुराण

11.श्रीमद्भागवत्पुराण

12.यजुर्वेद,11.83

13.शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये । शंयोरभिस्रवन्तु नः ।

'मापोमौषधीर्हिसीः'अर्थात् तू इन जलों तथा औषधियों को दूषित मत कर । क्योंकि शुद्ध पानी में अमृत तथा औषध का निवास होता है जल को शुद्ध रखने तथा प्रदूषित–जल को शुद्ध करने का उपाय वेदों में बताते हुए कहा गया है कि दिव्य जल हम सभी के लिए सुख देने वाला हो । इसमें वरुण, विश्वेदेवाः तथा वैश्वानर अग्नि प्रविष्ट हैं । यहाँ पर वरुण, शुद्ध वायु अथवा कोई जलशोधक गैस हो सकती है, सोम, चन्द्रमा, सोमलता–विश्वेदेवाः सूर्य किरणें तथा वैश्वानर अग्नि, सामान्य आग अथवा विद्युत हो सकती है । इससे प्रदूषित जल को शुद्ध किया जा सकता है । 'कुशा' एक घास–विशेष को भी जल–शुद्ध करने वाली बताया गया है । यजुर्वेद में यन्त्रों द्वारा या प्राकृतिक रूप से सूर्यताप को जल में पँहुचाना भी जल को शुद्ध करने का एक विशिष्ट उपाय बताया गया है । नदियों के अशुद्ध जल को भी विशाल स्तर पर शुद्ध करने के उपाय बताए गए हैं ।अथर्ववेद में पृथ्वी मातारूप में कही गई है, जन्म के पश्चात् पृथ्वी की गोद में खेलकर सभी बड़े होते हैं, अनेक प्रकार के प्रहारों को सहन करते हुए भी वह हम सब का पालन–पोषण करती है । इसीलिए सभी को इस पृथ्वी की सर्वथा रक्षा करनी चाहिए। ऋषि ने कहा है–"माता भूमि पुत्रोऽहं पृथिव्याः ।" वाल्मीकीय रामायण में भी कहा गया है– 'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी' । यजुर्वेद में कहा गया है कि हे पृथ्वी माता ! न हम तुम्हारी हिंसा करे और न तुम हमारी हिंसा करो । भूमि की हिंसा से अभिप्राय है– मनुष्य उस पर पैदा होन वाले पेड़–पौधों को निर्दयतापूर्वक न काटे तथा लगातार एक ही स्थान पर एक ही प्रकार की फसलों को न बोएं, क्योंकि इससे भूमि के पोषक तत्त्व नष्ट हो जाएंगे तथा उपजाऊ शक्ति नष्ट हो जाएगी । अत्यधिक रसायनिक खादों तथा कीटनाशक दवाईयों के प्रयोग से मिट्टी प्रदूषित होती है । यह सब उसकी हिंसा करना ही है । भूमि की समाप्त हुई उपजाऊ शक्ति को पुनः प्राप्त करने हेतु कुछ समय के लिए भूमि को खाली छोड़ देना चाहिए । शुद्ध वायु, सूर्य की किरणों तथा वर्षा आदि द्वारा उसमें शक्ति पुनः आ जाती है ।

वस्तुतः शुद्ध जल, वायु तथा मिट्टी ही एक अच्छा पर्यावरण बना सकते है । अतः इनको शुद्ध रखना अत्यन्तावश्यक हैं । आज अत्यधिक जनसंख्या के कारण उनके भरण–पोषण तथा निर्वहण के लिए अधिक साधनों की आवश्यकता पड़ती है, तब यन्त्रीकरण की ओर मुँह देखना पड़ता है,

14.यजुर्वेद,6.22

15.अप्स्वन्तरमृतम् अप्सु भैषजम्–ऋग्वेद 10.23.19

16.यासु राजो वरुणों यासु सोमशै विश्वदेवा यासूर्ज मदन्ति ।वैश्वानरो यास्वग्निः प्रविष्टस्ता आपो देवीरिह मामवन्तु ।।–ऋग्वेद,7.49

17.सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाभ्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः

Please cite this Article as : *डॉ. ज्योतिशर्मा* **,** *संस्कृत–साहित्य में पर्यावरण संरक्षण* **: Indian Streams Research Journal (March ; 2012)**

।–यजुर्वेद 1.12.31

18.यन्नदीषु–––––– परिजायते विषम । विश्वेदेवा निरितस्तत् सुवन्तु ।।– ऋग्वेद–7.50.03

19.अथर्ववेद–12.1.12

20.पृथिवी मात मां मा हिंसोर्मा अहम् त्वाम् । यजुर्वेद,10.23

21.सते वायुर्मातरिश्वा दधातु उत्तानाया हृदय यद् विकस्तम् । यजुर्वेद, 11.39

फलस्वरूप प्रदूषण बढ़ता है । जैन धर्म का पंचम व्रत इस समस्या के समाधान के लिए उपयोगी है । एक ब्रह्मचारी मनुष्य अपनी ऊर्जा को संयोजित कर बहुत कम बाह्य पदार्थों पर निर्भर रहकर ही अपना कार्य भलिभान्ति कर सकता है ।

आज प्रत्येक कार्यक्रम में ऊँची ध्वनि के लिए लाउडस्पीकर का प्रयोग किया जाता है । जो वस्तुतः हानिकारक है । आज अधिकांश लोगों को 50–60 वर्ष की आयु में ही ऊचाँ सुनने लगता हैं । वेदों में कहा गया है कि 'मधुरवाणी औषधी तथा तीखी वाणी पत्थर के समान होती है' । इसलिए ध्वनिप्रदूषण पैदा करने वाले यन्त्रों का प्रयोग नहीं करना चाहिए । वागउ सर्वभेषजम् वाग हि वज्र ।।–ऐतरेयब्राह्मण

आधुनिक युग में प्रदूषण का मूल कारण मानव की असीम भोग–विलास तथा कामना की लालसा है, इसी के वशीभूत होकर मानव प्रकृति के अन्य घटकों को अपने स्वार्थ के लिए निर्दयतापूर्वक प्रयोग करता है । जब तक इस भोगवृत्ति का सीमाकंन नहीं होगा, तब तक चाहे कितने भी भिन्न–भिन्न प्रकार के नए–नए पर्यावरण–मिलयन्त्र बना लें, पर्यावरण नहीं रुक पाएगा ।

आधुनिक युग के बढ़ते हुए प्रदूषण को रोकने का एकमात्र 'यज्ञ' ही सबसे सरल उपाय है । ऋग्वेद में भी कहा गया है–"यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यसन ।।" भगवान श्री कृष्ण द्वारा दिए गए गीतोपदेश में कहा गया है कि अनाज से प्राणी पैदा होते है । अनाज बादलों अर्थात् वर्षा से उत्पन्न होते हैं और बादल यज्ञ से होते हैं । यह यज्ञ यजमान आदि द्वारा की गई क्रियाओं से निष्पादित होता है । तब बादल पृथ्वी की जल से रक्षा करते हैं, (जब वायु वर्षा करने के लिए बहती हैं ।) बिजली चारों ओर चमकती है, औषधियाँ तथा वनस्पतियाँ बढ़ती हैं । धरती सम्पूर्ण संसार के हित योग्य हो जाती है । संसार के लोगों के लिए अनाज पैदा होता है ।

वस्तुतः यज्ञ एक वैज्ञानिक प्रक्रिया है जिसमें विभिन्न वनस्पतियों और औषधियों के उपयोग से स्वास्थ्य को बढ़ाने वाली वस्तुओं का वाष्पीकरण के रूप में प्रसारण होता है । यज्ञों में प्रयुक्त होने वाली हवन सामग्री में विभिन्न पदार्थों के परस्पर मिश्रण से विशिष्ट गुणों से युक्त हव्यद्रव्यों की आहुति डालने से वायुमण्डल में एक विशिष्ट प्रभाव उत्पन्न होता है । वेदमन्त्रों के उच्चारण से उसका प्रभाव और भी बढ़ जाता हैं ।

22.वाग् उ सर्वभेषजम् । वाग् हि वज्र ।। –ऐतरेय ब्राह्मण–4.1

23.ऋग्वेद 10.90.16

24.गीता 3.14

25.'प्रवाता वान्ति पतयन्ति विद्युत उदोषधीर्जिहते पिन्वते स्वः ।। ऋग्वेद 5.83.4

अग्नि में होमी हुई हवि वायुमण्डल के रोगकृमि रूप यातुधानों को वैसे ही विनष्ट कर देती है, जैसे नदी झागों को । यज्ञ की अग्नि में डाला हुआ घृत, गूगल, केसर, कस्तुरी, अगुरु, तगा, श्वेत–चन्दन, फल, कन्द, अन्न, सोमलता, गिलोय आदि की आहुति प्रदूषित वायुमण्डल के प्रदूषण को दूर करके उसे स्वच्छ एवं रोगरहित तथा सुगन्धित वायु में परिवर्तित कर देती है ।यदि यह कहा जाए कि जलने के पश्चात् कार्बन डाइओक्साइड गैस पैदा होती है तो वेद का वचन है –"आ वाया भूष शुचिप । उप नः " अर्थात् यह प्रदूषित वायु हवि की गन्ध से शुद्ध हो जाती है जो मनुष्य के प्राण, अपना तथा व्यान की रक्षा करती है । वनस्पतियों में पैदा होने वाल ` कीटाणुओं को नष्ट करने के लिए तथा वनस्पतियों की समुचित वृद्धि हेतु यज्ञीय हवि देने को कहा गया है ।यदि अग्निहोत्र सायंकाल को किया जाता है तो वह प्रातःकाल तक वायुमण्डल को प्रभावित करता है और यदि प्रातःकाल को किया जाए तो सायंकाल तक वायुमण्डल को प्रभावित करता है ।

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि यज्ञ करने से आधिभौतिक, आधिदैविक तथा आध्यात्मिक कष्टों को शान्त किया जा सकता है तथा सर्वत्र सुख शान्ति स्थापित की जा सकती है । वैदिक–काल में ऋषियों द्वारा पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु तथा वनस्पति–इन पांच तत्त्वों को देवता मानकर यज्ञ द्वारा प्राकृतिक स्रोतों तथा प्राकृतिकशक्तियों की रक्षा की गई थी। आँधी, वर्षा तथा सूर्य के द्वारा भी पर्यावरण शुद्ध होता है । आँधी प्रदूषण को बहा ले जाकर मनुष्य को उपकृत तथा रक्षित करती है । रोगों को पैदा करने वाले राक्षसों को पकड़ कर पीस डालती है । वर्षा से सब पेड़–पौधे, पर्वत, भूप्रदेश धूलकर साफ हो जाते हैं तथा सभी रोग दूर हो जाते हैं तथा मनुष्य की दीर्घायु होती है । सूर्य भी अपनी किरणों से तथा अपने द्वारा की जाने वाली सौरवृष्टि से चारों और पवित्रता करता है । यह वैज्ञानिक तथ्य भी है कि सूर्य की गर्मी और सूक्ष्म प्रकाश कृमियों को भी नष्ट कर देता है । फलस्वरूपप्रदूषण समाप्त हो जाता है । इस प्रकार कहा जा सकता है कि संस्कृत वाड्.मय में वर्णित वचनों के सम्यक् आचरण से एवं प्रयोग से वायु, जल, भूमि, आकाश तथा सूर्य इन पांचों घटको को शुद्धरखकर होती है तथा आधुनिक युग की ज्वलन्त समस्या पर्यावरण–प्रदूषण का समाधान हो सकता है ।

इत्यलम्

26.इदम् हविर्यातुधानान् नदी फेनमिवावहत । –अथर्ववेद 1.8.2

27.न तं यक्ष्मा अरुन्धते नैनं शपथो अश्नुते । यं भेषजस्य गुल्गुलोः सुरभिर्गन्धों अश्नुते ।।अथर्ववेद 9.38

28.ऋग्वेद 7.92.1

29.देवो वनस्पतिर्जषतां हविहोतर्यज ।।–ऋग्वेद 21.46

30.अथर्ववेद 19.53.3

31.पद्ध शग्मा भवन्तु मरुतो नः स्योनाः । – अथर्ववेद 4.27.6;पपद्ध गृभायत रक्षसः सं पिनष्टन । –ऋग्वेद 7.104.18

32.आ पर्जन्यस्य वृष्टयोदस्थामामृता व्यम। व्यहं सर्वेण पाप्मना वि यक्ष्मेण समायुषा ।– अथर्ववेद 3.1.1

Please cite this Article as : *डॉ. ज्योतिशर्मा*, *संस्कृत–साहित्य में पर्यावरण संरक्षण*: **Indian Streams Research Journal (March ; 2012)**